International Journal of Research in Economics and Social Sciences(IJRESS)
Available online at: http://euroasiapub.org
Vol. 8 Issue 4, April- 2018
ISSN(o): 2249-7382 | Impact Factor: 6.939 |

प्रेमचन्द के 'निर्मला' एवं 'गोदान' उपन्यासों में निहित सामाजिक-आर्थिक समस्याओं का एक अध्ययन

डॉ. राहुल
पी.एच.डी. समाजशास्त्र

भूमिका

प्रेमचन्द एक ऐसे युग के साहित्यकार हैं, उन्होंने जो लिखा उसे अनुभव किया जीया भी था । प्रेमचन्द ने अपने कथा-साहित्य के माध्यम से सबसे तीखा हमला औपनिवेशिक - सामंती व्यवस्था पर ही किया । प्रेमचन्द का उपन्यास-साहित्य 20वीं सदी की भारती पीड़ा की त्रासदी और प्रतिरोध का महान् दस्तावेज है । एक छोर पर कृषक-मजदूर वर्ग के समाजवादी संघर्ष से जुड़ता और दूसरे छोर पर जीवन की समस्याओं के प्रति अपने वस्तुपरक, विवेकसम्मत तथा पारदर्शी आलोचनात्मक रूख को उद्दीप्त करता है । प्रेमचन्द उस परम्परा के लेखक है, जिसमें शब्द और कर्म में न्यूनतम दूरी होती है । ऐसे ही लेखकों को जनता का व्यापक सम्मान मिलता है ।

निर्मला

'निर्मला' में प्रेम और सैक्स की समस्या अधिक ठोस सामाजिक और मनोवैज्ञानिक पृष्ठभूमि में उभरी है । निर्मला में प्रेमचन्द दहेज-प्रथा की विफलता, अनमेल विवाह, विधवा विवाह या ऐसी कोई भी समस्या उठाते हैं, तो एक बात का स्पष्ट पता चलता है कि वे एक नई यौन-नैतिकता और अर्थव्यवस्था दोनों की एक साथ खोज में है ।

यौन-भावना, आर्थिक संघर्ष और राजनैतिक मुक्ति परस्पर सम्बन्धित चीजें हैं । एक स्वाधीन, वर्ग विषमता से मुक्त समाज में ही यौन-भावना की सही मर्यादा कायम हो सकती है । सैक्स के धरातल पर भारतीय समाज अभी भी कुंठित है, क्योंकि उसमें जड़ता है । इसमें यौन-दमन तथा यौन-शोषण भी बड़े आकार में है । रुढ़िवादी

International Journal of Research in Economics and Social Sciences(IJRESS)
Available online at: http://euroasiapub.org
Vol. 8 Issue 4, April- 2018
ISSN(o): 2249-7382 | Impact Factor: 6.939 |

विवाह-पद्धति भी अनेक बार यौन-दमन या यौन शोषण की और ले जाती है । इसलिए प्रेमचन्द ने विवाह को एक मुख्य भारतीय समस्या के रूप में उठाया है, क्योंकि इसमें आर्थिक और यौन-संकट का सम्बन्ध अधिक स्पष्ट है । अत: कह सते हैं कि इस उपन्यास के माध्यम से नारी की कुठित यौन-भावना तथा नैतिक मूल्यों का ह्रास दृष्टिगोचर होता है । आधुनिक समाज में भी पूरा दहेज न लाने पर ससुराल में कष्ट भोगती हुई कुछ नई शादीशुदा युवतियां आज भी शरीर पर मिट्टी का तेल छिड़क कर आत्महत्या कर लेती है या उनकी हत्या हो जाती है । यहां सिर्फ यही समझने की आवश्यकता है कि आत्महत्या अगर एक अपराध है तो अन्य अपराधों की भांति इसकी जड़ें भी सामाजिक व्यवस्था में निहित हैं ।

अत: वर्तमान समाज में चल रही नयी यौन-नैतिकता का प्रेमचन्द ने समर्थन किया, भले इसे भाव रूप में दिखाया ।

गोदान

आधुनिक राजनैतिक उलटफेर के बावजूद आज भी 'गोदान' का भारत पुराना नहीं लगता, क्योंकि विकास की तमाम उद्घोषणाओं के बावजूद गरीब किसानों और मजदूरों की बुनियादी हालत आज भी वही है । आबादी में सबसे बड़ी जगह कृषकों की है फिर भी उनकी सामाजिक स्थिति कमजोर है । परिणामस्वरूप भारतीय समाज में आज भी धनिया जैसी औरतों की जिंदगी घुट रही है ।

परिस्थितियां अनेक हो सकती है, किन्तु उसकी भावनाओं को प्ररेणा देने वाली - उपन्यास की रचना में सहायक - केवल एक परिस्थिति अथवा विचार होता है, यद्यपि उससे संलग्न अनेक विचार होते हैं । अत: 'गोदान' उपन्यास में अनेक घटनाएं एवं समस्यायें ऐसी हैं जो जन सामान्य के जीवन में प्ररेणादायी बनती है ।

International Journal of Research in Economics and Social Sciences(IJRESS)
Available online at: http://euroasiapub.org
Vol. 8 Issue 4, April- 2018
ISSN(o): 2249-7382 | Impact Factor: 6.939 |

आदेशोंन्मुख को मूर्तता प्रदान करने के लिए उन्होंने दो कथानकों का तुलनात्मक अध्ययन भी दिया है । होरी की मुख्य कथा तो यथार्थ को लेकर चली है किन्तु मालती-मेहता का प्रसंग विशुद्ध रूप से आदर्श की स्थापना हेतु ही चित्रित किया गया है । वास्तव में मेहता के रूप में स्वयं प्रेमचन्द कथा के बीच में अवतरित हुए है । मेहता के मुख से स्वयं मुंशीप्रेमचन्द की आत्मा बोलती है । मेहता का समूचा दृष्टिकोण ही आरम्भ से लेकर अन्त तक लेखकीय और प्रकारान्तर से आदर्शवादी रहा है । मेहता स्वयं तो आदर्शवादी है हो, अपने प्रभाव से मिस मालती के चरित्र को भी आदर्श से परिपूरित कर देते हैं । मेहता स्वयं रायसाहब के सामने मालती के इस आदर्श चरित्र का बखान करते हुए कहते हैं-

इसी प्रकार गोबर, होरी, धनिया, झुनिया आदि प्रसंगों में घोर यथार्थ है । होरी तो यथार्थ का पुतला है । उसके जीवन में जो परिस्थितियाँ आती है, जिन घटनाओं का वह शिकार बनता है, वे सब यथार्थ है, पछाई गाय को द्वार पर बांधने की लालसा रखने वाले होरी को अन्त में गोदान के लिए भी गाय नहीं मिलती । किन्तु कहीं न कहीं बाह्य दृष्टि से यथार्थ होते हुए भी, अन्दर से होरी का चरित्र भी आदर्श से उत्प्रेरित है । वह किसान होने के नाते सहज स्वार्थी तो है किन्तु किसी के जलते घर को देख सकने वाला नहीं है । पुनिया और हीरा के कारण उसे क्या-क्या लांछन नहीं सहने पड़े । उधार लायी गाय को हीरा विष दे कर मार डालता है, किन्तु जब हीरा के भाग जाने पर पुनिया पर विपत्ति आती है तो वह भागा-भागा उसकी सहायता को दौड़ता है, वह उसके खेतों में हल चलाता है फसल उत्पन्न करता है ।

इस प्रकार प्रेमचन्द जी ने जीवन में जो आदर्श पाले थे और जिन आदर्शों की कल्पना की थी, वह यदा-कदा उनकी रचनओं में दिखते हैं क्योंकि मुन्शी जी समाज में

International Journal of Research in Economics and Social Sciences(IJRESS)
Available online at: http://euroasiapub.org
Vol. 8 Issue 4, April- 2018
ISSN(o): 2249-7382 | Impact Factor: 6.939 |

इस आदर्श की शिक्षा द्वारा बुराई को भलाई से जीतने की प्रेरणा दे रहे हैं । अत: उनके उपन्यासों में गांधीवादी भी दिखाई देता है । प्रेमचन्द जी ने यद्यपि कहीं-कहीं अपनी दृष्टि आदर्श पर रखी है । लेकिन मुख्य कथा का देखने से पता चलता है कि मुन्शी जी का प्रधान उद्देश्य यथार्थ का चित्रण करना तथा भारतीय ग्राम्य जीवन में सम्बन्द्ध व्यक्ति एवं समाज का सच्चा प्रतिबिम्ब प्रस्तुत करना था । इसी को मूर्तता प्रदान करने के लिए उन्होंने होरी, धनिया, गोबर, झुनिया, मातादीन, दातादीन, नोहरी, भोला, पटेश्वरी, झिंगुरीसिंह, नोखेराम एवं दुलारी सहुआइन तथा शोभा आदि से सम्बद्ध यथार्थ का चित्रण करने के साथ ही ग्रामीण क्षेत्र एवं नगर समाज के निम्न एवं उच्च वर्गीय समाज की झाँकियां प्रस्तुत की है।

समाज की इस झाँकियों को प्रस्तुत करने के पीछे प्रेमचन्द जी का यही लक्ष्य था कि समाज को इस प्रकार की घटनाओं से शिक्षा मिल सके । जो वर्ग दलित है उसका कारण क्या है तथा शिक्षा द्वारा उस 'कारण' का समाधान खोजा जा सकता है । इस उपन्यास के माध्यम से अत्याचारियों को समझाने का तथा दलितों एवं पिछड़ों को सुहानूभूति एवं शिक्षा देने का प्रयास किया है । ये सामाजिक यथार्थ 'गोदान' उपन्यास में विविध सन्दर्भो में प्रस्तुत किया गया है ।

हमारा समाज धर्म की आड़ लेकर अपने आपको स्थापित करने की चाहे कितने ही प्रयास करें किन्तु भारतीय सामान्य जन-मानस को उत्पीड़ित करने, उसका शोषण करने, एवं उसके साथ छल करने के अपराध से व मुफ्त नहीं हो सकता ।

इस उपन्यास के माध्यम से प्रेमचन्द जी ने समाज में फैले हुए अनाचार, पापाचार, व्यभिचार, अनैतिकता आदि का पर्दाफाश किया है। पटेश्वर, झिंगुरी सिंह, दातादीन, मातादीन एवं नोखेराम आदि निर्धन किसानों का गला काटते फिरते है और अपने घरों

International Journal of Research in Economics and Social Sciences(IJRESS)
Available online at: http://euroasiapub.org
Vol. 8 Issue 4, April- 2018
ISSN(o): 2249-7382 | Impact Factor: 6.939 |

में पनपते पाप और ध्यान भी नहीं देते, हां, दूसरों का मजाक बनाने में उन्हें रस अवश्य मिलता है । इसी प्रकार मुन्शी जी ने एक ऐसे वर्ग के पापों, अत्याचारों तथा अनैतिकता को उजागर किया है जो गरीब जनता का शोषण करते हुए भी अपनी नैतिकता के रूप में आस्था बनाये हुए हैं । ऐसी जनता जो शोषक वर्ग द्वारा पीड़ित है उसे ऐसे व्यक्तियों से सावधान रहना चाहिए तथा उसके पंजें से बचकर रहना चाहिए । लेखक ने देश में व्याप्त आर्थिक विषमता का चित्रण इस उपन्यास में किया है । प्रेमचन्द जी ने होरी का समूचा जीवन ही देश की दीन-हीन शोषित और पीड़ित जनता के प्रतीक के रूप में चित्रित किया है ।

अत: प्रेमचन्द जी ने इस उपन्यास के माध्यम से जनता को यह शिक्षा देने का प्रयास किया है कि निरक्षरता सबसे बड़ा अभिशाप है । किसान व मजदूरों की अनपढ़ता का लाभ उठाकर ही महाजन पैसे बटोरते फिरते हैं । अत: शिक्षा कृषक वर्ग एवं मजदूर वर्ग के साथ सभी के लिए अत्यन्त आवश्यक है । शिक्षा द्वारा व्यक्ति अपने अधिकारों को समझ कर प्राप्त कर सकता है तथा कर्तव्य एवं अधिकारों का सन्तुलन बनाकर जीवन में सुख पा सकता है ।

इसी प्रकार 'गोदान' में प्रेमचन्द भारतीय कृषक जीवन के यथार्थ को व्यापकता के साथ प्रकट करना चाहते थे । गोदान को महाकाव्यात्मक उपन्यास करते हुए नलिनी विलोचन शर्मा ने रेखांकित किया है 'इसकी समानान्तर कथाओं में समस्त भारतीय जीवन अवेष्टित है । साधारण आदमी से जुड़ी जो स्थितियां 'गोदान' में मिलती है ।

सामाजिक यथार्थ का चित्रण होने के कारण 'गोदान' उपन्यास में ग्रामीण एवं नागरिक जीवन की अनेक विषमताओं को इस रूप में चित्रित किया है जिससे समाज में व्याप्त बुराइयां दूर हो सकते। विशेष रूप में जमीदारों-साहूकारों द्वारा किसानों के

International Journal of Research in Economics and Social Sciences(IJRESS)
Available online at: http://euroasiapub.org
Vol. 8 Issue 4, April- 2018
ISSN(o): 2249-7382 | Impact Factor: 6.939 |

आर्थिक शोषण और ढांचे से ये समस्याएं सम्बन्धित है और इस उपन्यास में जीवन के गहन प्रश्नों पर भी विचार किया गया है ।

अत: इन सब बुराइयों की जड़ में है निरक्षरता या अशिक्षा। समाज की इन बुराइयों को दूर करने के लिए पहले समाज का शिक्षित होना अति आवश्यक है और प्रेमचन्द जी ने अपने 'निर्मला' एवं 'गोदान' उपन्यासों में इससे सम्बन्धित घटनाओं को चित्रित करके शिक्षा के महत्व को दर्शाया है ।

निष्कर्ष

प्रेमचन्द ने 'निर्मला' में भी आर्थिक स्थिति, दहेज प्रथा, अन्धविश्वास, छूआछूत, अनमेल विवाह, नारी घुटन जैसी विषमताओं को उपन्यास के माध्यम से उजागर किया है व विधवा जीवन एवं दहेज जैसी कुप्रथा पर विचार किया है । यह एक समस्यापरक उपन्यास है और नायिका निर्मला की व्यथा-कथा को बड़े मार्मिक रूप में प्रस्तुत करके पाठकीय सहानुभूति प्राप्त करने का प्रत्यन्न किया है । अनमेल विवाह की मूल समस्या को प्रस्तुत करते हुए असह्य विषय वयस्कतापूर्ण विवाह के दुष्परिणामों को अत्यन्त सजीव चित्रण इस कलापूर्ण कृति में है । यथार्थ के प्रति उनके बढ़ते आग्रह को देखकर यह स्पष्ट प्रतीत होता है कि मध्यवर्गीय जीवन की मूली पकड़ प्रेमचन्द जी के पास है । इसी प्रकार भारतीय कृषक जीवन के यथार्थ का चित्रण होने के कारण 'गोदान' उपन्यास में ग्रामीण एवं नागरिक जीवन के अनेक विषमताओं को प्रेमचन्द ने इस रूप में चित्रि किया है जिससे समाज में व्याप्त बुराइयां दूर हो सके । विशेष रूप में जमींदारों-साहूकारों द्वारा किसानों के आर्थिक शोषण और ढांचे से ये समस्याएं सम्बन्धित है और इस उपन्यास में जीवन के गहन प्रश्नों पर भी विचार किया गया है ।

International Journal of Research in Economics and Social Sciences(IJRESS)
Available online at: http://euroasiapub.org
Vol. 8 Issue 4, April- 2018
ISSN(o): 2249-7382 | Impact Factor: 6.939 |

संदर्भ ग्रन्थ सूची

क. आधार ग्रन्थ

1. मुंशी प्रेमचन्द 'निर्मला' सन् , इदारा-ई-फारूग
2. मुंशी प्रेमचन्द 'गोदान' सन् , सरस्वती प्रेस

ख. समीक्षात्मक ग्रन्थ

1. डॉ. शिवकुमार शर्मा, हिन्दी साहित्य : युग और प्रवृत्तियां अशोक प्रकाशन, , नई दिल्ली
2. एच.एस. यादव, सुधा यादव, भारतीय शिक्षा प्रणाली की संरचना एवं समस्याएं, टण्डन पब्लिकेशन्ज, लुधियाना
3. डॉ. एस.पी. चौबे शिक्षा के दार्शनिक, ऐतिहासिक और समाजशास्त्रीय आधार, 1999, आर.बी. प्रिन्टर्स, मेरठ-2
4. शुंभनाथ, प्रेमचन्द का पुनर्मूल्यांकन, नेशनल पब्लिकशिंग हाऊस, 1994, नयी दिल्ली
5. डॉ. हरिसिंह, काव्यशास्त्र, 1998, चित्रा प्रकाशन बुलन्द शहर
6. प्रेमचन्द लेखन का संकलन प्रेमोपहार, 1978, सरस्वती प्रेस
7. इन्द्रनाथ मदान, प्रेमचन्द का विवेचन, 1996, राजकमल, दिल्ली